जब सोये खुले आसमान के नीचे

● ब्रह्माकुमारी अमिता मराठे, इन्दौर

सन् 2007, मार्च का महीना था। हम शान्तिवन (आबू रोड) पहुँचे। पता चला, आने वाले बच्चों को टेन्ट में सोना होगा। पहला अवसर था, इस तरह रहने का। मन में हलचल शुरू हो गई। व्यर्थ ने वार करना शुरू कर दिया। सोचा, एक पहचान की बहन का पास में ही फ्लैट है, वहाँ तीन-चार दिन निकाल लेंगे। फिर सोचा, होटल में ठहरेंगे। तरह-तरह के विचारों के रूप में माया वार करने लगी, कैसे सोयेंगे? सामान कहाँ रखेंगे? कितनी परेशानी होगी? रात में मच्छर काटेंगे आदि-आदि।

कैसे कटेंगे चार दिन?

मैं आत्मा माया के वश में थी, सब कुछ भूल चुकी थी। बस एक ही सवाल था, कैसे कटेंगे चार दिन? मैंने कहा, हाँ माया, आप ठीक कह रही हो किन्तु वह बहन हम तीन बहनों को कैसे रखेगी? वहाँ जल की भी समस्या है, फिर आने-जाने में भी परेशानी होगी। व्यर्थ चिन्तन मेरा मजा ले रहा था। माया भी खुश थी। मेरे व्यर्थ संकल्पों का स्वागत बड़ी गर्मजोशी से कर रही थी। 'हम भगवान से मिलने आये हैं', यह भूलकर हम माया से मिल रहे थे।

कहानी एक संन्यासी की

मैंने देखा, मातायें, भाई कम्बल, तकिये, चद्दरें लाकर टेन्ट में रख रहे थे पर हम सोच में अपने सामान के पास ही खड़े थे। तभी मुझे एक संन्यासी की कुटिया वाली बात याद आई। दो संन्यासी हिमालय की तराई में रहते थे। एक वृद्ध और दूसरा नौजवान था। एक बार लंबी तीर्थ-यात्रा करके जब अपने ठिकाने पहुँचे तो देखा, आंधी-पानी ने उनकी कुटिया को तबाह कर दिया है। युवा संन्यासी बड़बड़ाने लगा कि जो लोग छल-फरेब करते हैं उनके मकान सुरक्षित रहते हैं। हम जो दिन-रात प्रभु-स्मरण करते हैं, उनकी कुटिया तहस-नहस हो जाती है। इस पर वृद्ध संन्यासी बोला, दु:खी मत हो, झोपड़ी तहस-नहस हो गई पर आधी छत अभी भी सही सलामत है, हमें तो ईश्वर का आभार मानना चाहिए कि हमारे लिए इतनी छत बचाकर रखी है।

युवा संन्यासी वृद्ध की बात समझ नहीं पाया, रात भर जागता रहा जबकि वृद्ध सोकर उठा तो बोला, धन्यवाद भगवान, आज खुले आसमान के नीचे बेहद अच्छी नींद आई। काश! यह छप्पर पहले उड़ जाता। इस पर युवा संन्यासी गुस्से से बोला, एक तो कुटिया ही नहीं रही, ऊपर से आप ईश्वर को धन्यवाद दे रहे हो। वृद्ध बोला, तुम हताश हो गए हो इसलिए रात भर जागते रहे हो और दु:खी रहे हो पर मैं खुश हूँ इसलिए सुख की नींद सो गया।

तुरन्त हुई सावधान

यह कहानी याद आते ही मेरा भी स्वमान जाग गया कि 'मैं सामंजस्य रखने वाली आत्मा हूँ'। योगावस्था में मैंने महसूस किया, बाबा सम्मुख हैं और कह रहे हैं, बच्ची, बेहद का संन्यास (वैराग्य), इच्छा मात्रम् अविद्या, व्यर्थ का त्याग, ये सब श्रीमत भूल गई क्या? देखो, यह शिवबाबा का घर है, बच्चों की चिन्ता बाबा को है। मैं तुरन्त सावधान हो गई। बहनों से कहा, कुछ मत सोचो, जो व्यवस्था बाबा देंगे स्वीकार है। तीन दिन खुले आसमान के नीचे टिमटिमाते तारों के स्वच्छ प्रकाश में अनोखी न्यारी बेहद की स्थिति का अनुभव करते बीत गये। सारा समय एकानॉमी (मितव्ययता) व एकनामी (एक बाबा की याद) के चमत्कार का अनुभव करते पुन: घर लौटे।

कहते हैं, निराशा व्यक्ति को दु:ख देती है। हर हाल में खुश रहने वाला व्यक्ति विपरीत स्थिति को भी अनुकूल बना लेता है। जिसके पास खुशी का भंडार है उसे दु:ख, निराशा तथा कमी का एहसास कभी नहीं होता बल्कि हर स्थिति का पूरा आनन्द लेने में वह सदा समर्थ रहता है। ❖

ब्र.कु. आत्मप्रकाश, सम्पादक, ज्ञानामृत भवन, शान्तिवन, आबू रोड द्वारा सम्पादन तथा ओमशान्ति प्रिन्टिंग प्रेस, शान्तिवन -307510, आबू रोड में प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के लिए छपवाया। संयुक्त सम्पादिका - ब्र.कु. उर्मिला, शान्तिवन
E-mail : omshantipress@bkivv.org Ph. No. : (02974) - 228125